लांदुश

कहानी

आइजक बेशेविस सिंगर

अनुवादः इंदुप्रकाश कानूनगो

282, रोहित नगर(प्रथम), गुलमोहर,
भोपाल– 462039, मो. 9981014157

''लांदुश होते हैं,'' मेरी चाची येंतील कहती। ''नहीं होते तो अच्छा होता। दरअसल, उनमें से अधिकांश ज्यादा कुछ नुकसान नहीं पहुँचाते-बल्कि काम में ही आते हैं। सब कुछ इस पर निर्भर है कि वे कहाँ और किसके साथ हैं।''

येंतील चाची ने छींट के किसी रूमाल में अपनी नाक छिनकी। यद्यपि वह कोई पुस्तक पढ़ते-पढ़ते नहीं बल्कि मन से कहानी सुना रही होगी फिर भी उसने कॉस्य फ्रेम में कसे अपनी ऐनक के शीशों को पोंछा। उसने सिर घुड़काया क्या घुड़काया कि अपने सारे फीतों और कृत्रिम हीरों से सिरजा उसका बोनेट(हैट) डगमगाने लगा। येंतील चाची मेरी सगी संबंधी नहीं थी। वह ग्रामीणों- यूँ कहें कि भठियारों, कारिंदों, ग्वालों की वंशज रही आयी। किसी कृषक समान उसकी देहयष्टि के अनंतर उत्तंग वक्षस्थल, चौड़े कंधे, और उभरी हुई गण्डास्थि थी, उसके एंबर वर्णी नयन किसी फाख्ते के ही से सौम्य थे। अंकल जोसफ द्वारा उसे ब्याहे जाने के पूर्व कतिपय गपोड़ियों ने उसे चेताना चाहा कि पहले कभी वह ग्वालन रही आयी है। चाचा का - ऐसा कहा जाता है कि - जवाब यूँ रहाः तब तो यह जोड़ी मॉस और दूध की बेकायदा(अनकोशर) मिश्रण रहेगी।

येंतेल चाची अपनी ऐनक के शीशे साफकरती ही करती गयी कि नतीजन वे चमक उठे और अपराह्नी सूरज के नन्हे नन्हे अक्स चिलकाने लगे। तब उसने उसे पुनः केस में रख दिया।

''हाँ, हम क्या बात कर रहे थे?'' उसने पूछा, ''अरे हाँ!; लांदुश। मेरे माँ-पिता के घर में एक लांदुश रहता था। उसने अपना बसेरा भट्ठी और काष्ठखोली के दरम्यान विन्यस्त किया हुआ था। उस घर को हमें छोड़ना था; लेकिन वह वहीं जमा रहा। लांदुश यहाँ वहाँ भटकते नहीं हैं; जहाँ आ बसे कि सदा के लिए वहीं जम गये। मैंने उसे देखा कभी नहीं। उन्हें देखा नहीं जा सकता, समझे। मैं छोटी बच्ची ही रही होगी कि सामान बाँध हम तुर्बिन की ओर चल पड़े लेकिन माँ और बहिन बाशा तो उसे परिवार ही का अंग मानती रही आयी थी। जेंटाइल लोग उसे 'डोमोविक '- अंतरंग आत्मा-कहते। जब कभी बाशा छींकती वह फुसफुसाताः गेसुंधेइतः।

''प्रांगण में बने हमारे स्टीम बाथ की फर्श पर दो पत्थर रहते। हमारी पोलिश आया कहीं से लकड़ी के लट्ठे ला उन्हें जला पत्थरों को खूब गरम कर उन पर बालटियों से तब तक पानी डालती कि जब तक भाप बेहद घनी नहीं हो जाती। स्नान के चलते बच्चे को घर ही के भीतर ठहरा रहना होता। किसी बालक को पसीना क्यों छूटता है? बेशक, उस खास क्षण आया संग रूकने से इंकार कर मैं उन्हीं के पीछे चलता। वही एकमात्र पल ऐसा होता जब मुझे माँ और बहिन निर्वस्त्र दीख पड़तीं। मैं शायद बताना भूल गया हूँ कि आया यिदिश बोलती थी। जैसे ही माँ बोलती, 'शिफेले' वह तत्क्षण पत्थरों पर बाल्टी भर पानी उँडेल देगी, तब वे दोनों उत्तप्त हो सिहरते। जब कभी गर्मी खूब ज्यादा हो जाती माँ चिल्लाती 'तपा गये ' तब वह दरवाजे को तनिक खोल देती ताकि समीर का झोंका भीतर बह आये। किसी दिन मुझे बड़ा कोहराम मचा उन्हें अपने साथ हम्माम ले जाने के लिए बाध्य करना पड़ा कि जिसकी भ्राँति के अनंतर बहिन अपने साथ तौलिया लेना भूल गयी। नौकरानी की जरूरत यहाँ नहीं रहने पर वह बाड़े जा गायों को संभालने लगी। माँ ने बाशा को तौलियों के लिए फटकारा तब बहिन को जाने क्या सूझा कि गीत गाने लगीः

लांदुश,
ला दो हाँथुश!

''खींच लाने की कोई जरूरत नहीं ? लांदुश तौलिये ले आता है। मुझे तो याद नहीं रहा, लेकिन माँ से और बाशा से कई एक दफा सुना। वे क्यों झूठ बोले होंगे? ऐसी बातें पुराने समय में होती रही हैं। अब संसार इतना विकृत हो गया है कि नरकदूत क्या देवदूत जाने कहाँ दुबक गये हैं।

''बहरहाल, जो कहानी तुम्हें सुनाने जा रही हूँ उसका हमारे घरे से कोई ताल्लुक नहीं। घटना तुर्बिन में घटी जो वहाँ जा हमारे बसने के अर्सा पहले आरंभ हो चुकी होगी। मोरदेसाई यारोस्लेवर नामक कोई शख्स वहाँ रहता था, जिसे जानते आये लोग दावे से कहते वैसा सुन्दर और साधु पुरूष पहले कभी नहीं रहा होगा। उसकी पत्नी का बैला फूमा, और एकमात्र पुत्री का पाया नाम था। होली बुक (बाइबल) में कहा गया है कि जिसे ईश्वर चाहता है उन्हें वह स्वयं किसी सुरक्षित जगह ले जाता है। रेब मोरदेसाई अभी युवा ही होगा, चालीस के अनकरीब। अचानक उसकी छाती पर कोई फुंसी आ उभरी- दरअसल फुंसी नहीं ऐसा फफोला था मानो जल गया हो। वह फफोला पल बीते अनेक फफोलों में तबदील हो गया, हे भगवान, क्या बताऊँ, वह मर गया। बढ़िया से बढ़िया